स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा, खण्ड–तीन

रूपक

– डॉ. मुन्ना साह

रूपक नाट्य के भेद होते हैं और उपरूपक नृत्य के भेद। नाट्यशास्त्र में रूपक के दस भेदों का उल्लेख मिलता है – "नाटक, प्रकरण, अंक, व्यायोग, भाण, समवकार, वीथी, प्रहसन, डिम और ईहामृग।"[1](भारतीय रंगमंच सिद्धांत और स्वरूप, पृ.235) संस्कृत आचार्यों में मतभेद के बावजूद अधिकांश आचार्यों ने रूपक के दस भेद ही माना है।

नाटक रूपक का प्रमुख भेद है। प्रत्येक नाटक में एक प्रमुख पात्र होता है। वह श्रेष्ठ गुणों से युक्त होता है तथा अन्य पात्र भी कथा के लिए प्रासंगिक होते हैं। नाटक मंचन की दृष्टि से लिखा जाता है, इसलिए रंगमंच और नेपथ्य दोनों स्थान से संवाद की महता होती है। नाटक में वीर और श्रृंगार रस प्रमुख होते हैं। नाटक में पाँच से दस अंक होते हैं। नाटक में सबसे पहले सूत्रधार के द्वारा पूर्वरंग का विधान होना चाहिए तथा अन्य नट के माध्यम से स्थापना, आमुख अथवा प्रस्तावना का आयोजन किया जाना चाहिए। **प्रकरण** की कथावस्तु काल्पनिक होती है, लेकिन उसका सम्बन्ध आम जीवन से जुड़ा होता है। इसका नायक आमात्य, विप्र अथवा वणिक् में से कोई एक होता है, जो शांत स्वभाव का होता है। **भाण** में एक कलावंत व्यक्ति ऐसे धूर्त चरित्र का वर्णन करता है, जिसे वह देखा हो या उसके बारे में किसी से सुना हो। इसमें वीर रस या श्रृंगार रस सूचक सौभाग्य कि सूचना आकाश भाषित रूप में की जाती है। इसका कथ्य काल्पनिक होता है। **डिम** की कथावस्तु प्रख्यात होती है। इसमें देव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, नाग, भूत, प्रेत, पिशाच आदि कोटियों के अत्यन्त उद्धत वर्ग के नायक होते हैं। इसमें हास्य और श्रृंगार को छोड़कर छः रस खलबली पैदा कर देते हैं। **अंक** रूपक की कथावस्तु भी प्रख्यात होती है लेकिन नाटककार उसे अपनी कल्पना के माध्यम से विस्तृत कर देता है। इसमें करुण रस की प्रधानता होती है। **व्यायोग** रूपक का इतिवृत्त प्रख्यात होता है तथा नायक धीरोधात्त होता है। स्त्री को आधार बना कर इसमें संग्राम दिखाने की प्रथा नहीं है। इसे एकांकी रूपक कहते हैं। इसका नायक कोई दैवी पुरुष या राजा होता है। **समवकार** भी रूपक का एक भेद है। इसकी कथावस्तु देवता अथवा असुर सम्बन्धित प्रख्यात होती है। इसके नायक देव अथवा दानव होते हैं। **वीथी** का अर्थ होता है मार्ग अथवा पंक्ति। इसमें पात्रों की

संख्या दो से अधिक नहीं होती। धनंजय ने वीथी को संधि, संध्यंग और अंक की दृष्टि से भाण के समीप ही माना है। भरत के अनुसार वीथी में उत्तम, मध्यम और अधम तीनों प्रकार के नायकों की योजना की जा सकती है। **प्रहसन** भाण के समतुल्य ही रूपक का एक रूप है। प्रहसन और भाण दोनों में ही वस्तु, सन्धि, संध्यंग और लास्य एक समान होते है। आचार्य भरत ने इसके दो भेद किए हैं – शुद्ध और संकीर्ण। इसका कथानक काल्पनिक और इसमें हास्य रस की प्रधानता होती है। **ईहामृग** नामक रूपक की कथावस्तु मिश्र मानी गई है। इसमें प्रख्यात और काल्पनिक दोनों प्रकार के कथावस्तु हो सकते हैं। इसमें एक मनुष्य होता है तथा दूसरा दैवी पुरुष लेकिन दोनों ही इतिहास प्रसिद्ध होते हैं।

———————————————————— ••• ————————————————————